CHAPTER - 02 लेखांकन सिद्धांत के आधार Theory Base of Accounting

स्मरणीय तथ्य:

- **लेखांकन मानक -** लेखांकन मानक लेखांकन के नियमों, निर्देशों का नीतिगत प्रलेख हैं जिसका प्रयोग लेखांकन कार्य के लिए किया जाता है |
- **लेखांकन प्रक्रिया -** लेखांकन प्रक्रिया से आशय वित्तीय विवरणों के निर्माण हेतु लेखांकन क्रियाओं के अनुक्रम से है|
- **लेखांकन अवधि -** व्यवसाय की वित्तीय परिणामों को मापने के लिए जो अवधि निर्धारित की गई है वह लेखांकन अवधि कहलाती है यह अवधि त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक या वार्षिक हो सकती है|
- **वस्तु एवं सेवा कर-** जीएसटी को वस्तु एवं सेवा कर के नाम से जाना जाता है। यह एक अप्रत्यक्ष कर है|
- **आधारभूत लेखांकन समीकरण -** आधारभूत लेखांकन समीकरण द्विपक्षीय अवधारणा पर आधारित है, जिसके अनुसार प्रत्येक व्यवहार का दोहरा लेखा किया जाता है। उपर्युक्त तथ्य को जब एक समीकरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है तो इसे ही लेखांकन समीकरण कहते हैं।

Memorable points :

- **Accounting Standard-** Accounting standards are policy documents of accounting rules and instructions which are used for accounting work.
- **Accounting process-** Accounting process means the sequence of accounting activities for preparing financial statements.
- **Accounting period -** The period determined to measure the financial results of the business is called accounting period. This period can be quarterly, half-yearly or annually.
- **Goods and Services Tax-** GST is known as Goods and Services Tax. This is an indirect tax.
- **Basic Accounting Equation -** Basic accounting equation is based on the two-way concept, according to which every transaction is recorded twice, When the above mentioned fact is presented in the form of an equation, it is called an accounting equation.

बहुवैकल्पिक प्रश्न (Multiple Choice Question)

1. लेखांकन सिद्धान्त हैं :

a. मनुष्य द्वारा निर्मित
b. सरकार द्वारा निर्मित
c. इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इण्डिया द्वारा निर्मित
d. उपरोक्त सभी

Accounting Principles are-

a. Man made
b. Built by government
c. Created by Institute of Chartered Accountants of India
d. All of these

2. लेखांकन प्रक्रिया है -

a. लेखांकन चक्र b. लेखांकन सिद्धांत
c. लेखांकन लेन-देन d. इनमें से कोई नहीं

Accounting process is -

a. Accounting Cycle
b. Accounting principles
c. Accounting Transaction
d. None of these

3. GAAP का पूरा नाम है

a. सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन नीति
b. सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्त
c. सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन आयोजन
d. इनमें से कोई नहीं ।

Full form of GAAP is-

a. Generally accepted accounting policy
b. Generally accepted accounting principles
c. Generally Accepted Accounting Events
d. None of these.

4. एक व्यवसायी द्वारा लेखांकन के किस स्वरूप को अपनाया जाता है?

a. लागत लेखांकन b. वित्तीय लेखांकन
c. सरकारी लेखांकन d. प्रबन्ध लेखांकन

Which form of accounting is adopted by a business man?

a. Cost Accounting
b. Financial Accounting

c. Government Accounting
d. Management Accounting

5. स्वामी को व्यापार का लेनदार माना जाता है ।

a. आगम मान्यता
b. द्विपक्षीय अवधारणा
c. इकाई अवधारणा
d. ऐतिहासिक लागत अवधारणा

The owner is Considered as a creditor of the business.

a. Revenue recognition
b. bilateral concept
c. Unit concept
d. Historical cost concept.

6. दोहरा पहलू अवधारणा के अनुसार-

a. दायित्व+ सम्पत्तियाँ =पूँजी
b. पूँजी + दायित्व = सम्पत्तियाँ
c. पूँजी + सम्पत्तियाँ = दायित्व
d. इनमें से कोई नहीं।

As per Dual Aspect concept -

a. Liabilities + Assets = Capital
b. Capital + Liabilities = Assets
c. Capital + Assets = Liabilities
d. None of these

7. संदिग्ध दायित्व चिट्ठे में दिखाया जाता यह किस परम्परा पर आधारित है?

a. रूढ़िवादी परम्परा b. प्रदर्शन की परम्परा
c. सारता की परम्परा d. नियमितता की परम्परा

Contingent Liability is shown in the Balance Sheet on which convention it is based?

a. Convention of Conservatism
b. Convention of Disclosure
c. Convention of Materiality
d. Convention of Consistency

8. लाभ की आशा न करें तथा सभी सम्भावित हानियों के लिए प्रावधान करें, सम्बन्धित हैं-

a. रूढ़िवादी परमपरा b. प्रदर्शन की परम्परा
c. सारता की परम्परा d. नियमितता की परम्परा

The policy to anticipate no Profit and provide for all possible losses is concerned with-

a. Convention Conservatism
b. Convention of Disclosure
c. Convention of Materiality
d. Convention of Consistency

9. लेखांकन का आधार है -

a. रोकड़ आधारित
b. लेखांकन का उपार्जन आधार
c. (a) एवं (b) दोनों
d. इनमें से कोई नहीं

Basis of Accounting is-

a. Cash Basis b. Accrual Basis
c. (a) and (b) both d. None of these

10. निम्न में से लेखा पुस्तकों में किसको अभिलेखित नहीं किया जायेगा

a. माल का क्रय
b. वेतन का भुगतान
c. कर्मचारियों का वेतन
d. माल की आपूर्ति के लिए आदेश देना

Which of the following will not be recorded in the books of accounts-

a. Purchase of Goods
b. Payment of Salary
c. Salary to Staff
d. Order for Supply of Goods

11. चालू व्यापार की अवधारणा के अनुसार व्यावसायिक इकाई अस्तित्व में रहेगी-

a. अनिश्चित काल तक b. पृथक इकाई अवधारणा
c. भौतिकता अवधारणा d. लागत अवधारणा

According to Going Concern Concept, the business entity will be in existence-

a. Indefinite period
b. Separate Entity Concept
c. Convention of Materiality
d. Cost Concept

12. लेखांकन के नकदी आधार के अन्तर्गत व्ययों का लेखा किया जाता है।

a. भुगतान किये जाने पर b. व्यय देय होने पर
c. 'A' एवं 'B' दोनों d. इनमें से कोई नहीं

Under the Cash Basis of Accounting, expenses are recorded -

a. On Payment
b. On Expenses being due
c. 'A' and 'B' both
d. None of these

13. लेखांकन प्रमाप इनके लिए अनिवार्य है -

a. कम्पनी b. साझेदारी
c. एकाकी व्यापार d. सेवा देने वाले संस्थान

Accounting standards are mandatory for-

a. Companies
b. Partnership
c. Sole trading

d. Charitable organisation

14. लेखांकन के उपार्जन आधार के अन्तर्गत व्ययों का लेखा किया जाता है।

a. भुगतान किये जाने पर
b. व्यय देय होने पर
c. 'A' एवं 'B' दोनों
d. इनमें से कोई नहीं

Under the Accrual Basis of Accounting, expenses are recorded–

a. On Payment b. On being incurred
c. 'A' and 'B' both d. None of these

15. स्थायी सम्पत्तियों के अतिरिक्त सम्पत्तियों, संयन्त्र तथा उपकरण के लिए लेखांकन

a. लेखांकन प्रमाप 6 b. लेखांकन प्रमाप 10
c. लेखांकन प्रमाप 3 d. लेखांकन प्रमाप 2

Accounting for fixed assets, property, plant and equipment-

a. AS-6 b. AS-10
c. AS-3 d. AS-2

16. जी एस टी का अर्थ है

a. सरकार एवं राज्य कर b. गुजरात राज्य कर
c. वस्तु एवं सेवा कर d. वस्तु आपूर्ति कर ।

GST stands for

a. government and state taxes
b. Gujarat State Tax
c. goods and services Tax
d. supply goods Tax.

17. जीएसटी का पूर्ण रूप क्या है?

a. माल और आपूर्ति कर b. वस्तु एवं सेवा कर
c. सामान्य बिक्री कर d. सरकारी बिक्री कर

What is the full form of GST?

a. Goods and Supply Tax
b. Goods and Services Tax
c. General Sales Tax
d. Government Sales Tax

18. लागत अवधारणा के अनुसार

a. परिसम्पत्तियों को लागत और बाजार मूल्य से कम पर दर्ज किया जाता है।
b. खरीद के समय बाजार मूल्य का अनुमान लगाकर सम्पत्ति दर्ज की जाती है।
c. सम्पत्ति को प्राप्त करने के लिए भुगतान किए गए मूल्य पर दर्ज किया जाता है।
d. सम्पत्ति दर्ज नहीं की जाती है

According to cost concept

a. Assets are recorded at the lower of cost and market value.
b. The assets are recorded by estimating the market value at the time of purchase.
c. The assets are recorded at the price paid to acquire it.
d. Assets is not recorded

19. भारत में, जीएसटी एक दोहरा मॉडल है

a. यूके b. कनाडा
c. यूएसए d. जापान

In India, the GST is a dual model of

a. UK b. Canada
c. USA d. Japan

20. ह्रास का लेखांकन समपत्तियों, संयंत्र तथा उपकरण -

a. लेखांकन प्रमाप 6 b. लेखांकन प्रमाप 10
c. लेखांकन प्रमाप 3 d. लेखांकन प्रमाप 2

Depreciation Accounting Property, Plant and Equipment-

a. AS-6 b. AS-10
c. AS-3 d. AS-2

21. भारत में जीएसटी कब से लागू हुआ

a. 1 जनवरी 2017 b. 1 अप्रैल 2017
c. 1 मार्च 2017 d. 1 जुलाई 2017

GST was implemented in India from

a. 1st January 2017 b. 1st April 2017
c. 1st March 2017 d. 1st July 2017

22. आय पहचान -

a. लेखांकन प्रमाप 9 b. लेखांकन प्रमाप 19
c. लेखांकन प्रमाप 29 d. लेखांकन प्रमाप 6

Income Recognition-

a. AS-9 b. AS-19
c. AS-29 d. AS-6

23. जीएसटी वस्तु एवं सेवा कर की खपत पर आधारित है-

a. विकास b. गंतव्य
c. नियति d. अवधि

GST is a consumption of goods and service tax based on-

a. Development b. Destination
c. Destiny d. Duration

24. रहतिया का मूल्यांकन -

a. लेखांकन प्रमाप 6 b. लेखांकन प्रमाप 10
c. लेखांकन प्रमाप 3 d. लेखांकन प्रमाप 2

Valuation of Inventory -

a. AS-6 b. AS-10
c. AS-3 d. AS-2

25. रोकड़ प्रवाह विवरण -

a. लेखांकन प्रमाप 6 b. लेखांकन प्रमाप 10

c. लेखांकन प्रमाप 3 d. लेखांकन प्रमाप 2

Cash Flow Statement-

a. AS-6 b. AS-10
c. AS-3 d. AS-2

26. भारत में इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इण्डिया में लेखांकन बोर्ड का गठन कब किया गया ?

a. अक्टूबर 1973 b. अप्रैल 1977
c. जून 1974 d. नवम्बर 1975

When the Accounting Standards Board was Constituted in India by the Institute of Chartered Accountants of India ?

a. October 1973 b. April 1977
c. June 1974 d. November 1975

27. अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक परिषद् की स्थापना हुई-

a. 2004 b. 2001
c. 2006 d. 2008

International Accounting standard board establish in the year of-

a. 2004 b. 2001
c. 2006 d. 2008

28. निम्न में लेखांकन मानकों के उद्देश्य हैं-

a. अंकेक्षकों के कार्य में सहायता
b. वित्तीय संघर्षों को सरल से हल करना
c. खातों को विश्वसनीय व तुलनीय बनाना
d. इनमें से सभी

Following are the objectives of Accounting Standard :

a. To help the auditors in the audit of accounts
b. To resolve the financial conflict easily
c. To make financial statement more meaningful and comparable
d. All the above

29. कम्पनी अधिनियम के अनुसार सभी कम्पनियों के लिए लेन-देन रखना अनिवार्य है-

a. नकदी आधार के अनुसार
b. उपार्जन आधार के अनुसार
c. नकदी या उपार्जन आधार के अनुसार
d. इनमें से कोई नहीं

Under the Companies Act, all companies are required to maintain their accounts according to :

a. Cash basis
b. Accrual basis
c. Either cash or Accrual basis
d. None of these

30. लेखांकन मानकों का पालन करना अनिवार्य है-

a. एकाकी व्यापारियों के लिए
b. साझेदारी व्यापारियों के लिए
c. कंपनी के लिए
d. उपरोक्त सभी के लिए

Adopting of Accounting Standards are mandatory for-

a. for sole traders
b. for partnership traders
c. for the company
d. for all of the above

31. आय मापी जाती है-

a. मिलान अवधारणा के आधार पर
b. मुद्रा मापन अवधारणा के आधार पर
c. चालू व्यवसाय की अवधारणा के आधार पर
d. इनमें से कोई नहीं

Income is measured on the basis of-

a. Matching concept
b. Money measurement concept
c. Based on the concept of going concern
d. None of these

32. लेखांकन प्रक्रिया में चरण होते हैं

a. दो b. तीन
c. चार d. पाँच

Stages in accounting process are:-

a. Two b. Three
c. Four d. Five

33. द्विपक्षीय अवधारणा पर आधारित सौदों के अभिलेखन की प्रणाली को कहा जाता है

a. दोहरा लेखा प्रणाली
b. रोकड़ प्रणाली
c. एकल लेखा प्रणाली
d. इनमें से कोई नहीं

The system of recording transactions based on dual concept is called:

a. Double accounting system
b. Cash system
c. Single accounting system
d. None of these

34. भारत में लेखांकन मानक निगर्मित किये जाते हैं -

a. नीति आयोग द्वारा
b. भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड द्वारा
c. इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इण्डिया द्वारा

d. इनमें से कोई नहीं

Accounting standards in India are issued by-

a. Neeti Ayog
b. SEBI
c. Institute of Chartered Accountants of India
d. None of these

35. लेखांकन का रोकड़ आधार अपनाया जाता है

a. लाभकारी संस्थाओं द्वारा
b. अलाभकारी संस्थाओं द्वारा
c. (A) एवं (B) दोनों में
d. इनमें से कोई नहीं

Cash basis of accounting is adopted by-

a. Profit making organisations
b. Not for profit organisations
c. Both (a) and (b)
d. None of these

36. जी.एस.टी ने कितने उपकरों को प्रतिस्थापित किया|

a. 25 b. 23
c. 28 d. 26

How many cesses did GST replace?

a. 25 b. 23
c. 28 d. 26

37. लेखांकन सिद्धान्त सामान्यत: आधारित होते हैं-

a. वस्तुनिष्ठता पर
b. व्यावहारिकता पर
c. अभिलेखन में सुगमता पर
d. संकल्पना पर

Accounting Principles generally based on :

a. On subjectivity
b. On Practicability
c. On convenience in recording
d. On Imagination

38. छूट पर प्रावधान का सृजन निम्न अवधारणा के अनुसार किया जाता है

a. रुढ़िवादिता की अवधारणा
b. मिलान की अवधारणा
c. सारता की अवधारणा
d. इनमें से सभी

Provision for discount is made due to the concept of-

a. Conservative concept
b. Matching concept
c. Materiality concept
d. None of these

39. स्थायी सम्पत्तियां हमेशा मूल्यांकित की जाती है

a. बाजार मूल्य पर b. लागत मूल्य पर
c. पुस्तक मूल्य d. इनमें से कोई नहीं

Fixed assets are always valued

a. At market price b. at cost price
c. Book value d. None of these

40. इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्स ऑफ इण्डिया द्वारा निर्गत और लागू किये गये लेखांकन मानकों की संख्या है

a. 35 b. 33
c. 32 d. 29

The number of accounting standards issued by the institute of Chartered Accountants of India is-

a. 35 b. 33
c. 32 d. 29

41. लेखांकन प्रक्रिया में प्रथम कदम है-

a. प्रारम्भिक प्रविष्टि की पुस्तकों में लेखा करना
b. तलपट बनाना
c. लेन देनों की पहचान
d. इनमें से सभी

First step in accounting process is-

a. Recording in the books of Original Entry
b. Making trial balance
c. Identification of Transactions
d. All of these

42. जीएसटी ने कितने राज्यस्तरीय अप्रत्यक्ष करों को प्रतिस्थापित किया

a. 7 b. 8
c. 9 d. 10

How many state level indirect taxes did GST replace?

a. 7 b. 8
c. 9 d. 10

43. जी.एस.टी. के कितने प्रमुख तत्व हैं–

a. 5 b. 2
c. 3 d. 1

How many main elements are of GST?

a. 5 b. 2
c. 3 d. 1

44. राज्य कर जिन्हें जी.एस.टी. में समाहित किया गया है-

a. राज्य मूल्यवर्धित कर b. क्रय कर
c. विलासिता कर d. इनमें से सभी

State taxes which are included in GST. Is included in-

a. VAT b. Purchase Tax
c. Luxury Tax d. All of these

45. लेखांकन मानक के लाभ है -

a. वित्तीय विवरणों को एकरूपता
b. वित्तीय विवरणों की विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता में सुधार लाना।
c. उपर्युक्त दोनों
d. इनमें से कोई नहीं

The benefits of accounting standards are -

a. consistency of financial statements
b. To improve the reliability and authenticity of financial statements.
c. Both of the above
d. None of these

46. दोहरा लेखा प्रणाली का जन्म हुआ था-

a. भारत में b. अमेरिका में
c. इटली में d. जापान में

Double Entry System Originated in :

a. India b. America
c. Italy d. Japan

47. लेखांकन सिद्धान्तों का महत्व है

a. निवेशकों के लिए b. लेखापालों के लिए
c. अंकेक्षकों के लिए d. इनमें से सभी

The importance of Accounting concepts is-

a. For Investors b. For Accountants
c. For Auditors d. All of these

48. लेखांकन मानक-16 सम्बन्धित है-

a. पट्टे के लिए लेखांकन b. ह्रास लेखांकन
c. प्रति अंश आय d. उधार की लागतें

Accounting Standard-16 is related to-

a. Accounting for Leases
b. Depreciation Accounting
c. Earning per Share
d. Borrowing Cost

49. आय का आंकलन किस आधार पर किया जाता है?

a. पूर्ण प्रकटीकरण अवधारणा
b. सारता की अवधारणा
c. मिलान अवधारण
d. इनमें से कोई नहीं

Income is measured on the basis of-

a. Full disclosure concept
b. Materiality concept
c. Matching concept
d. None of these

50. जी.एस.टी. ने कितने केन्द्रीय अप्रत्यक्ष करों को प्रतिस्थापित किया

a. 7 b. 10
c. 8 d. 9

How many central indirect taxes did GST replaces?

a. 7 b. 10
c. 8 d. 9

51. कोहलर ने कितने प्रकार की एकरूपता का वर्णन किया है ?

a. 5 b. 4
c. 3 d. 2

How Many types of consistency describe Kohler?

a. 5 b. 4
c. 3 d. 2

52. प्राथमिक गुण जो लेखांकन सूचना को निर्णय लेने में उपयोगी बनाते हैं-

a. सम्बद्धता तथा पक्षपात से स्वतन्त्र
b. विश्वसनीयता तथा तुलनीयता
c. तुलनीयता तथा एकरूपता
d. इनमें से कोई नहीं

The primary qualities that make accounting information useful for decision making are-

a. Relevance and Free from Bias
b. Reliability and Comparability
c. Comparability and Consistency
d. None of these

53. लेखांकन मानक उपयोगी है

a. सरकार के लिए b. निवेशकों के लिए
c. अंकेक्षकों के लिए d. सभी के लिए

Accounting standard are useful-

a. For Government b. For Investors
c. For Auditors d. All of them

54. लेखांकन मानकों से वित्तीय विवरणों में आती है

a. एकरूपता b. प्रमाणिकता
c. विश्वसनीयता d. इनमें से सभी

Accounting standard ensures Financial Statement to be.

a. Consistency b. Credibility
c. Reliability d. All of these

55. जी.एस.टी ने कितने अप्रत्यक्ष करों को प्रतिस्थापित किया |

a. 15 b. 17
c. 18 d. 16

How many indirect taxes did GST replace?

a. 15 b. 17
c. 18 d. 16

56. लेखांकन के उपार्जन आधार को कहा जाता है -
a. रोकड़ आधार b. व्यापारिक प्रणाली
c. लेखांकन समीकरण d. इनमें से कोई नहीं

Accrual basis of accounting is also called as-
a. Cash basis
b. Mercantile system
c. Accounting equation
d. None of these

57. अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक समिति का जन्म कब हुआ?
a. 29 जून, 1973 b. 19 जुलाई, 1980
c. 29 अप्रैल, 1975 d. 01 अक्टूबर, 1973

When was the international Accounting standard committee established?)
a. 29 june, 1973 b. 19 july, 1980
c. 29 April, 1975 d. 01 October, 1973

58. प्रायः लेखांकन की अवधि होती है-
a. 6 माह b. 3 माह
c. 9 माह d. 12 माह

Generally there is an Accounting period-
a. 6 months b. 3 months
c. 9 months d. 12 months

59. इनमें से कौन लेखांकन का आधार नहीं है?
a. रोकड़ आधार b. उपार्जन आधार
c. 'a' एवं 'b' दोनों d. उधार आधार

Which of the following is not a basis of accounting ?
a. Cash basis b. Accrual basis
c. Both 'a' and 'b' d. Credit basis

60. जी.एस.टी. के प्रमुख तत्व हैं-
a. CGST, SGST और IGST
b. CGST, WGST और IGST.
c. AGST, SGST और IGST
d. इनमें से कोई नहीं

The main elements of GST-
a. CGST, SGST और IGST
b. CGST, WGST और IGST.
c. AGST, SGST और IGST
d. None of these

61. लेखांकन सिद्धान्तों के विभिन्न नाम हैं :
a. मान्यताएँ b. परिपाटियाँ
c. अवधारणाएँ d. उपरोक्त सभी

Various names of accounting principles are-
a. Assumptions b. Conventions
c. Concepts d. All of these

62. बट्टे पर प्रावधान बनाया जाता है, के अनुसार-
a. रूढ़िवादिता की अवधारणा
b. सारता की अवधारणा
c. आगम मान्यता अवधारणा
d. इनमें से कोई नहीं

Provision is made for discount, according to-
a. Conservatism concept
b. Materiality concept
c. Revenue Recognition concept
d. None of these

63. IASC का मुख्यालय है-
a. लंदन b. फ्रांस
c. कनाडा d. अमेरिका

Head Office of IASC
a. London b. France
c. Canada d. America

64. आयकर अधिनियम के अनुसार लेखांकन अवधि होती है
a. 1 जनवरी से 31 दिसम्बर तक
b. 1 अप्रैल से 31 मार्च तक
c. 1 जुलाई से 30 जून तक
d. 1 अक्टूबर से 30 सितम्बर तक

As per Income Tax Act, accounting period is-
(a) From 1st Jan, to 31st Dec
(b) From 1st April to 31st March
(c) From 1st July to 30th June
(d) From 1st Oct. to 30th Sept.

65. भारत GST लागू करने वाला कौन-सा देश है |
a. 161वाँ देश b. 160वाँ देश
c. 162वाँ देश d. 163वाँ देश

India is which country to implement GST?
a. 161वाँ देश b. 160वाँ देश
c. 162वाँ देश d. 163वाँ देश

66. अन्तर्राज्यीय लेन-देन की दशा में कर लगाया जाता है
a. आईजीएसटी b. सीजीएसटी
c. एसजीएसटी d. यूटीजीएसटी

In case of Inter-State transactions the tax that shall be levied is-
a. IGST b. CGST
c. SGST d. UTGST

67. लेखांकन मानक-13 सम्बन्धित है-
a. विनियोगों के लिए लेखांकन

b. एकीकरण के लिए लेखांकन
c. उधार की लागतें
d. खण्ड विभागीय प्रतिवेदन

Accounting Standard-13 is related to-

a. Accounting for Investments
b. Accounting for Amalgamation
c. Borrowing Cost
d. Segment Reporting

68. ASB का पूर्ण रूप है -

a. लेखांकन मानक बोर्ड b. लेखांकन सिस्टम बोर्ड
c. लेखांकन समिति बोर्ड d. इनमें से कोई नहीं

Give the full form of ASB-

a. Accounting Standard Board
b. Accounting System Board
c. Accounting Samiti Board
d. None of these

69. दोहरा लेखा प्रणाली का आविष्कार इस सन् में हुआ था -

a. 1947 b. 1494
c. 1400 d. 1594

Double Entry System was first discovered in the year-

a. 1947 b. 1494
c. 1400 d. 1594

70. जीएसटी परिषद् द्वारा निर्धारित जीएसटी की दरें हैं

a. 5%, 12%, 18%, 28%
b. 6%, 10%, 20%, 30%
c. 3%, 6%, 9%, 12%
d. उपरोक्त में से कोई नहीं

The GST rates set by the GST Council are

a. 5%, 12%, 18%, 28%
b. 6%, 10%, 20%, 30%
c. 3%, 6%, 9%, 12%
d. None of above

Answer

Q.No.	Ans.	Q.No.	Ans.	Q.No.	Ans.	Q.No.	Ans.
1	a	21	d	41	c	61	d
2	a	22	a	42	a	62	a
3	b	23	b	43	c	63	a
4	b	24	d	44	d	64	b
5	c	25	c	45	c	65	a
6	b	26	b	46	c	66	a
7	b	27	b	47	d	67	a
8	a	28	c	48	d	68	a
9	c	29	b	49	c	69	b
10	d	30	c	50	c	70	a
11	a	31	a	51	c		
12	a	32	c	52	b		
13	a	33	a	53	d		
14	b	34	c	54	d		
15	b	35	c	55	b		
16	c	36	b	56	b		
17	b	37	b	57	a		
18	c	38	a	58	d		
19	b	39	b	59	d		
20	b	40	c	60	a		

अति लघु उत्तरीय प्रश्न
(Very Short Answer Type Questions)

1. लेखांकन के कितने आधार हैं?

उत्तर- लेखांकन के तीन आधार है- i. रोकड़ आधार, 2. उपार्जन आधार, 3. मिश्रित आधार।

How many bases of accounting are there?

Ans- There are three bases of accounting - 1. Cash basis, 2. Accrual basis, 3. Mixed basis.

2. लेखांकन प्रक्रिया में निहित कोई दो चरणों के नाम लिखिए |

उत्तर- (i) वित्तीय लेन-देनों की पहचान करना, (ii) लेन-देनों का अभिलेखन करना,

Name any two steps involved in the accounting process.

Ans- (i) Identifying financial transactions, (ii) Recording transactions,

3. लेखांकन मानक क्या है?

उत्तर- लेखांकन मानक लेखांकन के नियमों, निर्देशों का नीतिगत प्रलेख हैं जिसका प्रयोग लेखांकन कार्य के लिए किया जाता है|

What is Accounting Standard?

Ans- Accounting standards are policy documents of accounting rules and instructions which are used for accounting work.

4. अन्तिम रहतिया को किस मूल्य पर मूल्यांकित किया जाता है?

उत्तर- अन्तिम स्टॉक का मूल्यांकन लागत मूल्य अथवा बाजार मूल्य में से जो कम हो उस पर किया जाता है।

At what price closing stock is valued?

Ans- Valuation of closing stock is either cost price or market price whichever is less.

5. लेखांकन प्रक्रिया का क्या अर्थ है ?

उत्तर- लेखांकन प्रक्रिया से आशय वित्तीय विवरणों के निर्माण हेतू लेखांकन क्रियाओं के अनुक्रम से है |

What is the meaning of the accounting process?

Ans- Accounting process means the sequence of accounting activities for preparing financial statements.

6. भारतीय लेखांकन मानक बोर्ड की स्थापना कब हुई ?

उत्तर- भारतीय लेखांकन मानक बोर्ड की स्थापना अप्रैल 1977 को हुई |

When was the Indian Accounting Standards Board established?

Ans- Indian Accounting Standards Board was established in April 1977.

7. किस अधिनियम के अनुसार वित्तीय विवरणों को लेखांकन मानकों के अनुसार बनाना अनिवार्य है ?

उत्तर- भारतीय कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 211 के अनुसार वित्तीय विवरणों को लेखांकन मानकों के अनुसार बनाना अनिवार्य है|

According to which Act it is mandatory to prepare financial statements as per accounting standards?

Ans- According to Section 211 of the Indian Companies Act 2013, it is mandatory to prepare financial statements as per accounting standards.

8. किस अवधारणा के तहत पूँजी को दायित्व माना जाता है ?

उत्तर- व्यवसाय की इकाई अवधारणा के तहत पूँजी को दायित्व माना जाता है |

Under which concept is capital considered a liability?

Ans- Under the unit concept of business, capital is considered a liability.

9. लेखांकन सिद्धांतों की कोई दो सीमाएं बताइए |

उत्तर- i सीमित क्षेत्र

ii सर्वमान्य सिद्धांतों का अभाव

Mention any two limitations of accounting principles.

Ans- i. Limited area

ii. Lack of universally accepted principles

10. अन्तिम रहतिया को किस अवधारणा के अनुसार, लागत मूल्य अथवा बाजार मूल्य में से जो कम हो उस पर मूल्यांकित किया जाता है?

उत्तर- अन्तिम रहतिया को रूढ़िवादिता की अवधारणा के अनुसार, लागत मूल्य अथवा बाजार मूल्य में से जो कम हो उस पर मूल्यांकित किया जाता है?

According to which concept, cost price or market price whichever is lower is evaluated?

Ans- According to the concept of conservatism, the closing stock is valued at cost price or market price, whichever is lower?

11. लेखांकन का उपार्जन आधार किस लेखांकन अवधारणा का पालन करता है ?

उत्तर- लेखांकन का उपार्जन आधार, मिलान अवधारणा का पालन करता है|

Which accounting concept does the accrual basis of accounting follow?

Ans- Accrual basis of accounting follows the matching concept.

12. लेखांकन अवधि किसे कहते है ?

उत्तर- व्यवसाय की वित्तीय परिणामों को मापने के लिए जो अवधि निर्धारित की गई है वह लेखांकन अवधि कहलाती है यह अवधि त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक या वार्षिक हो सकती है |

What is the accounting period?

Ans- The period determined to measure the financial results of the business is called the accounting period. This period can be quarterly, half-yearly or annually.

13. किस अवधारणा के अनुसार प्रत्येक लेन - देन के दो पक्ष होते है ?

उत्तर- द्विपक्षीय अवधारणा के अनुसार प्रत्येक लेन - देन के दो पक्ष होते है |

According to which concept every transaction has two sides?

Ans- According to the dual concept, every transaction has two sides.

14. कोहलर ने कितने प्रकार की एकरूपता का वर्णन किया है /

उत्तर- कोहलर ने तीन प्रकार की एकरूपता का वर्णन किया है जो इस प्रकार है - उदग्र एकरूपता, क्षैतिज एकरूपता, तृतीय- मुखी एकरूपता |

How many types of uniformity have been described by Kohler?

Ans- Kohler has described three types of uniformity which are as follows - vertical uniformity, horizontal uniformity, third-party uniformity.

15. किस लेखांकन मानक के अनुसार आय पर कर लगाये जाते है ?

उत्तर- लेखांकन मानक- 22 के अनुसार आय पर कर लगाये जाते है |

According to which accounting standard taxes are imposed on income?

Ans- Taxes are imposed on income as per Accounting Standard- 22.

16. बुनियादी लेखांकन समीकरण क्या है?

उत्तर- बुनियादी लेखांकन समीकरण है,

सम्पत्ति = पूँजी + दायित्व

इसका मतलब है कि किसी फर्म की सभी सम्पत्तियों का मौद्रिक मूल्य कुल दायित्व के बराबर है |

What is the basic accounting equation?

Ans- The basic accounting equation is,

Assets = Capital + Liabilites

It means that all the monetary value of all assets of a firm are equal to the total liabilites.

17. लेखांकन मानकों के क्या उद्देश्य हैं ?

उत्तर- लेखांकन मानकों को तैयार करने का मुख्य उद्देश्य वित्तीय-विवरणों को तैयार तथा प्रस्तुत करने में एकरूपता लाना तथा उनको अर्थपूर्ण बनाना है।

What are the objectives of Accounting Standards?

Ans- The main objective of preparing accounting standards is to create uniformity in preparation and presentation of financial statements and to make them meaningful.

लघु उत्तरीय प्रश्न
(Short Answer Type Questions)

1. लेखाकारों के लिए यह मानना क्यों आवश्यक है कि व्यावसायिक इकाई एक चालू संस्था बनी रहेगी?

उत्तर- चालू व्यवसाय संबंधी अवधारणा इस तथ्य पर आधारित होती है कि व्यवसाय अनिश्चित काल तक चलता रहेगा जब तक की व्यापारी दिवालिया नहीं हो जाए या व्यापार समापन की स्थिति में नहीं आ जाता इसलिए लेखाकारों द्वारा यह माना जाता है कि व्यावसायिक इकाई एक चालू संस्था बनी रहेगी | इस मान्यता के अनुसार व्यवसाय दीर्घकाल तक चालू रहती है और व्यवसाय के दीर्घकाल के कारण ही निवेशक व्यापार में धन निवेश करने को उत्साहित रहता है |

Why is it necessary for accountants to assume that business entities will remain a going concern?

Ans- The going concern concept is based on the fact that the business will continue indefinitely unless the trader becomes insolvent or goes into liquidation, hence accountants assume that the business entity will remain a going concern. According to this belief, the business continues to operate for a long time and due to the longevity of the business, the investor remains excited to invest money in the business.

2. राजस्व/ आगम को कब मान्यता दी जानी चाहिए?

उत्तर- आगम मान्यता अवधारणा के अनुसार, आय उस तिथि को उपार्जित मानी जाती है जिस तिथि को वह प्राप्त होती है | राजस्व/ आगम को तब मान्यता दी जानी चाहिए ,जब निम्नलिखित दो शर्तें पूरी होती है - पहला, उपार्जन की क्रिया पूर्ण हो गई हो और दूसरा, विनिमय हो चुका हो अर्थात माल की सुपुर्दगी दे दी गई हो |

आय का उपार्जन उस समय नहीं माना जाएगा, जब सिर्फ उत्पादन हुआ हो या जिस समय आदेश प्राप्त हुआ हो |

When should revenue be recognized?

Ans- According to the income recognition concept, income is considered earned on the date it is received. Revenue/proceeds should be recognized when the following two conditions are fulfilled - first, the procurement process has been completed and second, the exchange has taken place i.e. the goods have been delivered.

Earning of income will not be considered only at the time production takes place or at the time the order is received.

3. लेखांकन मानक के लाभ एवं सीमा का वर्णन करें |

उत्तर- लेखांकन मानक के लाभ निम्नलिखित है -

i. लेखांकन मानक, वित्तीय विवरण तैयार करने हेतु लेखांकन व्यवहारों में से भिन्नता का उन्मूलन करने में सहायता करते हैं।

ii. लेखांकन मानक पारदर्शी लेखांकन मानदण्ड विकसित करते हैं।

iii. लेखांकन मानक वित्तीय विवरणों की अंतर-कम्पनी तथा अंतरा कम्पनी तुलनात्मकता में सहायता करते हैं।

लेखांकन मानकों की सीमाएँ निम्नलिखित है -

i. लेखांकन मानकों में विभिन्न वैकल्पिक लेखांकन व्यवहारों में से चुनाव करना होता है जिस प्रयोग में लाने में कठिनाई आती है।

ii. लेखांकन मानकों का दृढ़ता से पालन किया जाता है जिससे लेखांकन मानकों को लागू करने में लोचशीलता नहीं आ पाती।

iii. लेखांकन मानक कानून को प्रत्यादेश नहीं दे सकते।

Describe the advantages and limitations of accounting standards.

Ans- Following are the benefits of accounting standards -

i. Accounting standards help to eliminate variations in accounting practices for preparing financial statements.

ii. Accounting standard develop transparent accounting norms.

iii. Accounting standards help in inter-company and intra-company comparability of financial statements.

Following are the limitations of accounting standards -

i. Accounting standards require a choice among various alternative accounting treatments, which makes them difficult to implement.

ii. Accounting standards are strictly followed which does not allow flexibility in applying accounting standards.

iii. Accounting standards cannot mandate law.

4. वस्तु एवं सेवा कर क्या है ?

उत्तर- "एक देश एक कर" के मूलमंत्र का अनुसरण करते हुए भारत सरकार ने जुलाई 01, 2017 को माल एवं सेवा कर (जी. एस.टी.) लागू किया ताकि निर्माताओं, उत्पादकों, निवेशकों और उपभोक्ताओं के हितों के लिए माल, वस्तुओं और सेवाओं का मुक्त परिचालन हो सके।

जो निर्माणकर्ताओं से लेकर उपभोक्ताओं तक वस्तुओं और सेवाओं की पूर्ति पर लागू होता है। जी.एस.टी. के लागू होने से केन्द्र एवं राज्यों द्वारा पारित बहु-अप्रत्यक्ष कर निरस्त कर दिए गए हैं जिसके परिणामस्वरूप संपूर्ण देश एक संयुक्त बाजार में परिवर्तित हो सका है। जी.एस.टी के लागू होने से व्यापार करने की सुगमता को बढ़ावा मिला और राजस्व में वृद्धि हुई | जी.एस.टी. से 17 अप्रत्यक्ष करों (8 केन्द्रीय + 7 राज्य स्तर पर), 23 उपकरों का प्रतिस्थापन किया गया है। जी.एस.टी. में केन्द्रीय जी.एस.टी. (CGST) और राज्य जी.एस.टी (SGST) का समावेश है। जी.एस.टी. के तीन प्रमुख तत्व हैं–CGST, SGST और IGST.

What is Goods and Services Tax?

Ans- Following the mantra of “One Country One Tax”, Government of India implemented Goods and Services Tax (GST) on July 01, 2017 in order to improve the quality of goods, commodities and services in the interests of manufacturers, producers, investors and consumers. Services can operate freely.

Which applies to the supply of goods and services from manufacturers to consumers. With the implementation of this Act, multiple indirect taxes passed by the Center and the States have been repealed, as a result of which the entire country has been transformed into a single market. The implementation of GST boosted the ease of doing business and increased the revenue. GST 17 indirect taxes (8 central + 7 at the state level), 23 cesses have been replaced. GST Central GST in (CGST) and State GST (SGST). Three main elements of GST are CGST, SGST and IGST.

5. सामान्यतः मान्य लेखांकन सिद्धांत क्या है ?

उत्तर- लेखांकन अभिलेखों में समरूपता व एकरूपता लाने के लिए कुछ सिद्धान्तों व नियमों का विकास किया गया है जिन्हें इस पेशे से जुड़े सभी लेखाकारों की सामान्य स्वीकृति प्राप्त है। इन नियमों को विभिन्न नामों जैसे - सिद्धांत, संकल्पना, परिपाटी, अवधारणा, परिकल्पनाएं, संशोधक सिद्धांत आदि नामों से जाना जाता है।

सामान्यत: मान्य सिद्धांतों से तात्पर्य वित्तीय विवरणों के लेखन व निर्माण एवं प्रस्तुतिकरण में एकरूपता लाने के उद्देश्य से प्रयुक्त उन सभी नियमों व निर्देशक क्रियाओं से है जिनका प्रयोग व्यावसायिक लेन -देनों के अभिलेखन व प्रस्तुतिकरण के लिए किया जाता है | सामान्यतः मान्य लेखांकन सिद्धांतों का विकास एक लम्बी अवधि में पूर्व अनुभवों, प्रयोगों अथवा परम्पराओं, व्यक्तियों एवं पेशेवर निकायों के विवरणों एवं सरकारी एजेन्सियों द्वारा नियमन के आधार पर हुआ है तथा यह अधिकांश पेशेवर लेखाकारों द्वारा सामान्य रूप से स्वीकृत है। लेकिन यह नियम स्थिर प्रकृति के नहीं हैं। यह उपयोगकर्त्ताओं की आवश्कताओं, वैधानिक, सामाजिक तथा आर्थिक वातावरण से प्रभावित हो निरंतर परिवर्तित होते रहते हैं।

What is the generally accepted accounting principle?

Ans- To bring consistency and uniformity in accounting records, some principles and rules have been developed which have general acceptance of all the accountants associated with this profession. These rules are known by various names like - principle, concept, convention, concept, hypotheses, modifier principle etc.Generally accepted principles are used in writing, preparation and presentation of financial statements. All those rules and directive procedures used for the purpose of bringing uniformity are used for recording and presenting business transactions.

Generally accepted accounting principles are developed over a long period of time based on past experiences, experiments or traditions, individuals and professionals. It is based on descriptions of entities and regulation by government agencies and is generally accepted by most professional accountants. But these rules are not of static nature. These keep changing continuously, influenced by the needs of the users, legal, social and economic environment.

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
(Long Answer Type Questions)

1. 'लेखांकन अवधारणाओं और लेखांकन मानकों को आम तौर पर वित्तीय लेखांकन के सार के रूप में जाना जाता है।' वर्णन करें |

उत्तर- वित्तीय लेखांकन वित्तीय विवरणों की तैयारी से संबंधित है और विभिन्न लेखांकन उपयोगकर्ताओं को वित्तीय जानकारी प्रदान करता है। यह व्यवसायिक इकाई, धन मापन, संगति, रूढ़िवाद आदि जैसी बुनियादी लेखांकन अवधारणाओं के अनुसार किया जाता है। ये अवधारणाएँ एक ही लेन देन को व्यवहार में लाने के लिए विभिन्न विकल्पों की अनुमति देती हैं। उदाहरण के लिए, स्टॉक और मूल्यह्रास की गणना के लिए कई विधियाँ उपलब्ध हैं, जिनका विभिन्न फर्मों द्वारा पालन किया जा सकता है। इससे विभिन्न व्यावसायिक संस्थाओं के बीच वित्तीय परिणामों की असंगतता और अतुलनीयता की समस्या के कारण बाहरी उपयोगकर्ताओं द्वारा वित्तीय परिणामों की गलत व्याख्या होती है। असंगतता और अतुलनीयता को कम करने और वित्तीय विवरणों की तैयारी में एकरूपता लाने के लिए, भारत में इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट ऑफ इंडिया द्वारा लेखांकन मानक जारी किए जा रहे हैं। लेखांकन मानक अस्पष्टताओं और विसंगतियों को दूर करने में मदद करते हैं। इसलिए, लेखांकन मानकों और लेखांकन अवधारणाओं को वित्तीय लेखांकन का सार कहा जाता है।

'Accounting concepts and accounting standards are generally known as the essence of financial accounting.' Describe |

Ans- Financial accounting deals with the preparation of financial statements and providing financial information to various accounting users. This is done as per the basic accounting concepts like business unit, measurement of wealth, consistency, conservatism etc. These concepts allow different options for putting the same transaction into practice. For example, there are several methods available for calculating stocks and depreciation, which can be followed by different firms. This leads to misinterpretation of financial results by external users due to the problem of inconsistency and incomparability of financial results between different business entities. To reduce inconsistency and incomparability and to bring uniformity in the preparation of financial statements, accounting standards are being issued in India by the Institute of Chartered Accountants of India. Accounting standards help in removing ambiguities and inconsistencies. Therefore, accounting standards and accounting concepts are called the essence of financial accounting.

2. वित्तीय विवरण तैयार करने के लिए सुसंगत आधार अपनाना क्यों महत्वपूर्ण है? व्याख्या करना।

उत्तर- वित्तीय विवरण समय-समय पर व्यावसायिक गतिविधियों की वृद्धि या गिरावट या परिणामों की तुलना, यानी इंट्रा-फर्म (एक ही संगठन के अंदर तुलना) या अंतर-फर्म तुलना (विभिन्न फर्मों के बीच तुलना) के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार किए जाते हैं। तुलना तभी की जा सकती है जब लेखांकन नीतियां एक समान और सुसंगत हों।

सतत सिद्धांत के अनुसार, एक बार चयनित लेखांकन प्रथाओं को समय की अवधि (यानी वर्षों के बाद वर्षों) तक जारी रखा जाना चाहिए और इसे बहुत बार नहीं बदला जाना चाहिए। ये वित्तीय विवरणों को बेहतर ढंग से समझने में मदद करते हैं और इस प्रकार तुलना करना आसान बनाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई फर्म स्टॉक रिकॉर्ड करने के लिए फीफो पद्धति का पालन कर रही है, और भारित औसत पद्धति पर स्विच करती है, तो इस वर्ष के परिणामों की तुलना पिछले वर्षों से नहीं की जा सकती है। हालाँकि स्थिरता लेखांकन नीतियों में बदलाव को नहीं रोकती है, लेकिन यदि वित्तीय परिणामों की बेहतर प्रस्तुति और बेहतर समझ के लिए नीतियों में बदलाव आवश्यक है, तो फर्म को अपनी लेखांकन नीतियों में बदलाव करना होगा और सभी प्रासंगिक जानकारी एवं कारणों को पूर्ण रूप से प्रकट करना होगा।

Why is it important to adopt a consistent basis for the preparation of financial statements? Explain.

Ans- Financial statements are drawn to provide information about growth or decline of business activities over a period of time or comparison of the results, i.e. intra-firm (comparison within the same organisation) or inter-firm comparisons (comparison between different firms). Comparisons can be performed only when the accounting policies are uniform and consistent.

According to the Consistency Principle, accounting practices once selected should be continued over a period of time (i.e. years after years) and should not be changed very frequently. These help in

a better understanding of the financial statements and thus make comparisons easy. For example, if a firm is following FIFO method for recording stock, and switches over to the weighted average method, then the results of this year can not be compared to that of the previous years. Although consistency does not prevent changes in the accounting policies, if a change in the policies is necessary for better presentation and better understanding of the financial results, the firm must make the change in its accounting policies and must fully disclose all the relevant information and reasons will have to do.

3. 'मुनाफे की आशा न करें बल्कि सभी नुकसानों के लिए प्रावधान करें' के आधार पर अवधारणा पर चर्चा करें।

उत्तर- 'मुनाफे की आशा न करें बल्कि सभी नुकसानों के लिए प्रावधान करें' यह रूढ़िवादिता की अवधारणा से संबंधित है| इस सिद्धांत के अनुसार, लाभ की उम्मीद नहीं करनी चाहिए, बल्कि भविष्य में होने वाली संभावित हानियों की व्यवस्था कर लेनी चाहिए | ऐसे कई प्रावधान हैं जो रूढ़िवादिता की अवधारणा के अनुसार बनाए गए हैं,जैसे -

i. अंतिम रहतिया का मूल्यांकन क्रय मूल्य और बाजार मूल्य दोनों में से जो भी कम हो उस पर किया जाना चाहिए| उदाहरण के लिए, स्टॉक का मूल्यांकन लागत या बाजार मूल्य, जो भी कम हो, पर किया जाता है। यदि बाजार मूल्य लागत मूल्य से कम है, तो हानि का हिसाब लगाया जाना चाहिए; जबकि, यदि पहला, बाद वाले से अधिक है, तो यह लाभ तब तक दर्ज नहीं किया जाना चाहिए जब तक कि स्टॉक बेच न दिया जाए।

ii. देनदारों पर अप्राप्य ऋण के लिए संचय किया जाना चाहिए |

iii. लेनदारों पर बट्टे की व्यवस्था नहीं की जानी चाहिए आदि।

यह सिद्धांत सामान्य ज्ञान पर आधारित है और निराशावाद को दर्शाता है। इससे व्यवसाय को अनिश्चितता और अप्रत्याशित परिस्थितियों से निपटने में भी मदद मिलती है।

Discuss the concept on the basis of 'do not expect profits but make provision for all losses'.

Ans- 'Do not expect profits but make provision for all losses' This is related to the concept of conservatism. According to this principle, one should not expect profits, but should make arrangements for possible losses in the future. There are many provisions which have been made according to the concept of conservatism, such as -

i. The value of clossing stock should be valued at the lower of purchase price and market value. And for example, stocks are valued at cost or market value, whichever is lower. If the market price is less than the cost price, a loss must be accounted for; Whereas, if the former exceeds the latter, this profit should not be recorded until the stock is sold.

ii. Reserves should be made for bad debts owed by debtors.

iii. There should not be any provision for discount on creditors etc.

This theory is based on common sense and reflects pessimism. This also helps the business deal with uncertainty and unexpected circumstances.

4. मिलान अवधारणा क्या है? किसी व्यावसायिक संस्था को इस अवधारणा का पालन क्यों करना चाहिए?

उत्तर- प्रत्येक व्यवसायी का प्रमुख उद्देश्य लाभ कमाना होता है। लाभ कमाने के लिए प्रेरित होकर ही व्यापारी व्यावसायिक जोखिमों को उठाता है | मिलान अवधारणा के अनुसार यह बताया गया है कि वर्ष के दौरान किए गए सभी खर्च, चाहे भुगतान किया गया हो या नहीं, और वर्ष के दौरान अर्जित सभी राजस्व, चाहे प्राप्त हुआ हो या नहीं, उस वर्ष के लाभ का निर्धारण करते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए अर्थात लाभ या हानि का पता लगाने के लिए किसी अवधि में किए गए खर्चों को उसी लेखांकन अवधि में प्राप्त राजस्व का मिलान किया जाना चाहिए या आगमों में से व्ययों को घटाया जाना चाहिए ताकि यह पता लगाया जा सके कि किसी लेखांकन अवधि में व्यवसाय ने लाभ अर्जित किया है या उसे हानियाँ उठानी पड़ी हैं, आगम मिलान संकल्पना में लेखांकन के इसी पक्ष पर बल दिया जाता है। इस संकल्पना के अनुसार अवधि विशेष मे अर्जित आगमों का मिलान उसी अवधि के व्ययों से किया जाना चाहिए।

आगम का व्यय से मिलान करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए -

i. व्ययों की गणना करते समय अदत्त व्ययों को भी व्यय मानना चाहिए।

ii. यदि अग्रिम व्यय या पूर्वदत्त व्यय हो तो अगले वर्ष से सम्बन्धित व्यय की राशि को कुल व्यय की राशि से घटा दिया जाना चाहिए और शेष राशि को ही चालू वर्ष का व्यय मानना चाहिए।

iii. उपार्जित आय को आगम में जोड़ लेना चाहिए।

iv. अग्रिम प्राप्त आय को आगम में से घटा देना चाहिए।

v. वर्ष के अन्त में अबिक्रीत माल की लागत और इस पर किये गये व्यय को अगले वर्ष ले जाया जाना चाहिए, क्योंकि इसे अगले वर्ष ही बेचा जा सकेगा।

vi. मिलान अवधारणा सुनिश्चित करता है कि आगम एवं उनके सभी सम्बन्ध व्ययों का लेखांकन उसी अवधि में किया जाए।

व्यावसायिक संस्थाएँ मुख्य रूप से लेखांकन अवधि के दौरान वास्तविक लाभ या हानि का पता लगाने के लिए इस अवधारणा का पालन करती हैं। यह संभव है कि उसी लेखांकन अवधि में, व्यवसाय या तो भुगतान कर सकता है या प्राप्त कर सकता है जो उसी लेखांकन अवधि से संबंधित हो भी सकता है और नहीं भी। इससे लाभ या हानि को या तो घटा दिया जाता है या कम कर दिया जाता है, जिससे संबंधित लेखांकन अवधि में व्यवसाय और उसकी गतिविधियों की वास्तविक दक्षता का पता नहीं चल पाता है। इसी प्रकार, विभिन्न व्यय भी हो सकते हैं जैसे, मशीनरी, भवन आदि की खरीद। ये व्यय प्रकृति में पूँजीगत हैं और इनका लाभ समय के साथ उठाया जा सकता है। ऐसे मामलों में, केवल ऐसी परिसम्पत्तियों के मूल्यह्रास को व्यय के रूप में माना जाता है और संबंधित वर्ष के लाभ या हानि की गणना के लिए इसे ध्यान में रखा जाना चाहिए। इस प्रकार, किसी भी व्यावसायिक इकाई के लिए मिलान अवधारणा का पालन करना बहुत आवश्यक है।

What is the matching concept? Why should a business organization follow this concept?

Ans: The main objective of every businessman is to earn profit. A businessman takes business risks only after being motivated to earn profit. The matching concept states that all expenses incurred during the year, whether paid or not, and all revenues earned during the year, whether received or not, are taken into account while determining the profit for that year. i.e. to find out profit or loss, expenses incurred in a period should be matched with revenues received in the same accounting period or expenses should be subtracted from revenues to find out that in an accounting period Whether the business has earned profits or suffered losses, this aspect of accounting is emphasized in the income matching concept. According to this concept, the revenues earned in a particular period should be matched with the expenses of the same period.

While matching revenue with expenditure, the following things should be kept in mind:

i. While calculating expenses, unpaid expenses should also be considered as expenses.

ii. If there is advance expenditure or prepaid expenditure, then the amount of expenditure related to the next year should be deducted from the amount of total expenditure and the remaining amount should be considered as the expenditure of the current year.

iii. Earned income should be added to income.

iv. Income received in advance should be deducted from revenue.

v. The cost of unsold goods at the end of the year and the expenditure incurred on it should be carried forward to the next year, because it can be sold only in the next year.

vi. The matching concept ensures that revenues and all their related expenses are accounted for in the same period.

Business entities mainly follow this concept to find out the actual profit or loss during the accounting period. It is possible that in the same accounting period, the business may either make or receive payments which may or may not belong to the same accounting period. This results in the profit or loss being either overstated or understated, thereby obscuring the true efficiency of the business and its activities in the relevant accounting period. Similarly, there may be various expenses like purchase of machinery, buildings etc. These expenditures are capital in nature and can be availed over time. In such cases, only the depreciation of such assets is treated as expense and should be taken into account for computing the profit or loss of the concerned year. Thus, it is very essential for any business unit to follow the matching concept.

5. लेखांकन अवधि अवधारणा एवं लागत अवधारणा का वर्णन करें ?

उत्तर- लेखांकन अवधि अवधारणा - लेखांकन अवधि से तात्पर्य समय के उस विस्तार से है जिसके अंत में व्यावसायिक संगठन वित्तीय विवरण बनाता है। इन विवरणों द्वारा ही वास्तव में यह पता चलता है कि उस अवधि विशेष में व्यवसाय ने लाभों का अर्जन किया है या उसे हानियाँ उठानी पड़ी हैं, व्यवसाय की परिसम्पत्तियों तथा देयताओं आदि की स्थिति क्या है? इस प्रकार की सूचना की विभिन्न उपयोगकर्ताओं को विभिन्न उद्देश्यों के लिए नियमित समय अन्तराल पर आवश्यकता होती रहती है क्योंकि कोई भी फर्म अपने वित्त संबंधित परिणामों को जानने के लिए लम्बे समय तक इन्तजार नहीं कर सकती। इसका कारण है कि इसी सूचना के आधार पर नियमित समय अन्तराल पर विभिन्न निर्णय लेने होते हैं। इसलिए एक निश्चित अंतराल, जो सामान्यतः एक वर्ष होता है, के बाद वित्तीय विवरणों का निर्माण किया जाता है ताकि सभी उपयोगकर्ताओं को समय से सभी सूचनाएं उपलब्ध कराई जा सकें। यह समय अंतराल लेखांकन अवधि कहलाता है। कंपनी अधिनियम 1956 व आयकर अधिनियम के अनुसार भी आय विवरण को वार्षिक रूप में बनाना आवश्यक है। जबकि कुछ परिस्थितियों में अंतरिम वित्तीय विवरण बनाना भी आवश्यक होता है| -

लागत अवधारणा - लागत अवधारणा की मुख्य आवश्यकता है कि सभी परिसम्पत्तियों को पुस्तकों में उनके क्रय मूल्य पर ही अभिलिखित किया जाए। इस क्रय मूल्य में परिसंपत्ति का प्राप्ति मूल्य, परिवहन व्यय, स्थापना व्यय व किये गये व्यय सम्मिलित हैं जो उस परिसंपत्ति को काम में लाने योग्य बनाने के लिए किये जाते हैं। इस संकल्पना के अनुसार

लागत की प्रकृति ऐतिहासिक है जो कि परिसंपत्ति की प्राप्ति की तिथि को भुगतान की गई राशि द्वारा व्यक्त की जाती है तथा यह वर्षों के अन्तराल में भी बदलती नहीं है। उदाहरणार्थ यदि फर्म द्वारा कोई भवन 1.5 करोड़ का क्रय किया गया था तो आने वाले वर्षों में भी उसका क्रय मूल्य यही रहेगा बदलेगा नहीं चाहे उसका बाजार मूल्य कितना भी क्यों न बदल जाए। सत्यापित ऐतिहासिक लागत का चुनाव अभिलेखन में वस्तुनिष्ठता लाता है क्योंकि इस लागत को क्रय प्रलेखों से सत्यापित कियाजा सकता है। दूसरी ओर बाज़ार मूल्य के आधार पर अभिलेखन विश्वसनीय नहीं होगा क्योंकि बाजार मूल्य में समय-समय पर परिवर्तन होते रहते हैं। इसलिए एक समय के मूल्य व दूसरे समय के मूल्य की तुलना में कठिनाई होती है |

ऐतिहासिक लागत के आधार पर लेखांकन की एक महत्त्वपूर्ण सीमा है कि यह व्यवसाय के वास्तविक मूल्य का प्रदर्शन नहीं करता इसलिए सदैव कुछ गुप्त लाभों की संभावना बनी रहती है |

Describe accounting period concept and cost concept?

Ans- **Accounting Period Concept -** Accounting period refers to the extension of time at the end of which a business organization prepares financial statements. It is only through these details that it is actually known whether the business has earned profits or suffered losses during that particular period, what is the status of the assets and liabilities of the business etc. This type of information is required by various users at regular intervals for various purposes because no firm can wait for long to know its financial results. The reason for this is that on the basis of this information various decisions have to be taken at regular intervals. Therefore, financial statements are prepared after a certain interval, usually one year, so that all the information can be made available to all the users in a timely manner. This time interval is called the accounting period. According to the Company Act 1956 and the Income Tax Act, it is necessary to prepare the income statement annually. Whereas in some circumstances it is also necessary to prepare interim financial statements. ,

Cost Concept - The main requirement of cost concept is that all assets should be recorded in the books at their purchase price. This purchase price includes the acquisition price of the asset, transportation expenses, installation expenses and expenses incurred to make the asset ready for use. According to this concept, the nature of cost is historical which is expressed by the amount paid on the date of acquisition of the asset and it does not change even with the interval of years. For example, if a building was purchased by a firm for Rs 1.5 crore, then its purchase price will remain the same in the coming years and will not change no matter how much its market price changes. Selection of historical cost brings objectivity in recording as this cost can be verified from purchase documents. On the other hand, recording on the basis of market value will not be reliable because market value changes from time to time. Therefore, there is difficulty in comparing the price at one time and the price at another time.

An important limitation of accounting based on historical cost is that it does not reflect the real value of the business, hence there is always a possibility of some hidden profits.

6. लेखांकन प्रणालियां किसे कहते है वर्णन करें |

उत्तर- लेखांकन की प्रणालियों को तीन प्रकारों में बाँटा जाता है -

i. इकहरा लेखा प्रणाली
ii. भारतीय लेखा प्रणाली
iii. दोहरा लेखा प्रणाली

i. **इकहरा लेखा प्रणाली-** इकहरा लेखा प्रणाली वित्तीय प्रलेखों को अभिलिखित करने की सम्पूर्ण प्रणाली नहीं है। क्योंकि यह प्रत्येक लेन-देन का द्विपक्षीय लेखांकन नहीं करती। इकहरी लेखा प्रणाली पुस्तपालन की वह प्रणाली है जो लेन-देन के एक पक्ष (या पहलू) अर्थात् डेबिट या क्रेडिट का ही लेखा करती है। इस प्रणाली के केवल व्यक्तिगत खाते व रोकड़ बही ही बनाया जाता है। इस प्रणाली में वास्तविक खाते या सम्पत्ति खाते तथा अवास्तविक या नाममात्र खाता तैयार नहीं किये जाते हैं। इसमें कुछ लेने-देनों का केवल एक पक्ष ही अभिलिखित किया जाता है कुछ लेन-देनों के दोनों पक्षों का जबकि अन्य के एक पक्ष का ही लेखा किया जाता है या बिल्कुल ही नहीं किया जाता है। इस प्रणाली में जो खाते रखे जाते हैं वह अधूरे एवं अव्यवस्थित होते हैं इसलिए इस प्रणाली के अन्तर्गत रखे गए लेखों को अपूर्ण, अक्रमबद्ध, अस्पष्ट तथा अविश्वसनीय कहा जाता है, लेकिन यह प्रणाली सरल एवं कम खर्चीली होने के कारण छोटे व्यापारियों द्वारा अपनाया जाता है |

ii. **भारतीय लेखा प्रणाली -** यह भारत में अत्यन्त प्राचीनकाल से लेखांकन की प्रचलित पद्धति है। जब व्यावसायिक वित्तीय लेन -देनों का लेखा ,लेखांकन बहियों में कुछ निश्चित सिद्धान्तों एवं परम्पराओं के आधार पर किसी भारतीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा या मुड़िया भाषा में किया जाता है तो उसे 'भारतीय लेखांकन प्रणाली' कहा जाता है। यह प्रणाली भारतीय भाषा में एवं भारत में प्रचलित रहने के कारण ही इस प्रणाली को भारतीय लेखांकन प्रणाली कहा जाता है। भारत में व्यापारियों को महाजन के नाम से पुकारते हैं। यही कारण है कि पद्धति को 'महाजनी बहीखाता

प्रणाली' भी कहा जाता है| इस प्रणाली में लेखांकन हेतु लम्बी-लम्बी बहियों का प्रयोग किया जाता है जिनके पन्ने मजबूत भूरे या पीले रंग के होते हैं जिस पर लाल कपड़े लेखा वर्ष की समाप्ति पर लाभ-हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा तैयार किया जाता है। यह प्रणाली भी दोहरा लेखा प्रणाली की ही तरह है।

iii. **दोहरा लेखा प्रणाली -** यह पुस्तपालन की सबसे अच्छी प्रणाली मानी जाती है। इस पद्धति में प्रत्येक व्यवहार के दोनों रूपों अर्थात डेबिट और क्रेडिट का लेखा किया जाता है। इस प्रणाली में लेन-देनों के अभिलेखन की द्विपक्षीय संकल्पना पर आधारित है। इसके अनुसार प्रत्येक लेन-देन के व्यवसाय पर दो प्रकार के प्रभाव होते हैं, एक लाभ लेने का व दूसरा लाभ देने का। इसीलिए यह दो खातों को प्रभावित करते हुए बही खाते में दो स्थानों पर अभिलिखित होती है। प्रत्येक लेन-देन का लेखा इस सिद्धांत पर आधारित होता है कि प्रत्येक लेन -देन को एक नाम पक्ष तथा एक जमा पक्ष में अभिलिखित किया जाए। इसलिए यदि एक खाते के नाम पक्ष में प्रविष्टि हुई है तो दूसरे खाते के जमा पक्ष में अवश्य प्रविष्टि होगी। द्विअंकन एक सम्पूर्ण प्रणाली है क्योंकि इसके अन्तर्गत प्रत्येक लेन-देन के दोनों पक्षों का लेखा किया जाता है। यह कुछ निश्चित सिद्धान्तों पर आधारित होती है। वर्ष के अन्त में अन्तिम खाते बनाकर व्यवसाय की वास्तविक वित्तीय स्थिति की जानकारी प्राप्त करना इस पद्धति के माध्यम से आसान होता है।

यह प्रणाली इसलिए भी अधिक पूर्ण व विश्वसनीय है क्योंकि इसमें धोखे व व्यापार की सम्पत्तियों के दुरुपयोग की संभावना कम से कम होती है। खातों में होने वाली गणितीय अशुद्धियों को तलपट बनाकर सुधारा जा सकता है। बड़े संगठन व छोटे संगठन दोनों ही लेखांकन की इस प्रणाली को सहजतापूर्वक अपना सकते हैं|

Describe what are accounting systems?

Ans- Accounting systems are divided into three types -

i. Single Entry System
ii. Indian Accounting System
iii. Double Entry System

i. **Single Entry System -** Single accounting system is not a complete system of recording financial documents. Because it does not do bilateral accounting of every transaction. Single accounting system is a system of book keeping which records only one side (or aspect) of a transaction, i.e. debit or credit. Only personal accounts and cash books are maintained in this system. In this system, real accounts or property accounts and non-real or nominal accounts are not prepared. In this, only one side of some transactions is recorded, in some transactions both sides are recorded while in others only one side is recorded or not at all. The accounts kept in this system are incomplete and disorganized, hence the accounts kept under this system are said to be incomplete, disorganized, vague and unreliable, but this system is adopted by small businessmen because it is simple and less expensive.

ii. **Indian Accounting System -** This is the prevalent method of accounting in India since ancient times. When business financial transactions are recorded in the accounting books on the basis of certain principles and conventions in any Indian language or regional language or Mudiya language, then it is called 'Indian Accounting System'. Because this system is in the Indian language and is prevalent in India, this system is called the Indian Accounting System. In India, traders are called Mahajan. This is the reason why the system is also called 'Mahajani Book keeping System'. In this system, long books are used for accounting whose pages are of strong brown or yellow color on which red cloth is prepared, profit-loss account and financial balance sheet are prepared at the end of the accounting year. This system is also like the double accounting system.

iii. **Double Entry System -** This is considered the best system of book- keeping. In this method both forms of each transaction i.e. debit and credit are accounted for. This system is based on the bilateral concept of recording transactions. According to this, every transaction has two types of effects on the business, one of taking profit and the other of giving profit. That is why it is recorded at two places in the ledger, affecting two accounts. The accounting of every transaction is based on the principle that every transaction should be recorded on one debit side and one credit side. Therefore, if there is an entry in the debit side of one account, there will definitely be an entry in the credit side of the other account. Double entry is a complete system because under it both sides of every transaction are accounted for. It is based on certain principles. Through this method, it is easy to get information about the actual financial position of the business by preparing final accounts at the end of the year.

This system is also more complete and reliable because in it the possibility of fraud and misuse of business assets is minimal. Mathematical errors in the accounts can be rectified by preparing a trial balance. Both big organizations and small organizations can easily adopt this system of accounting.